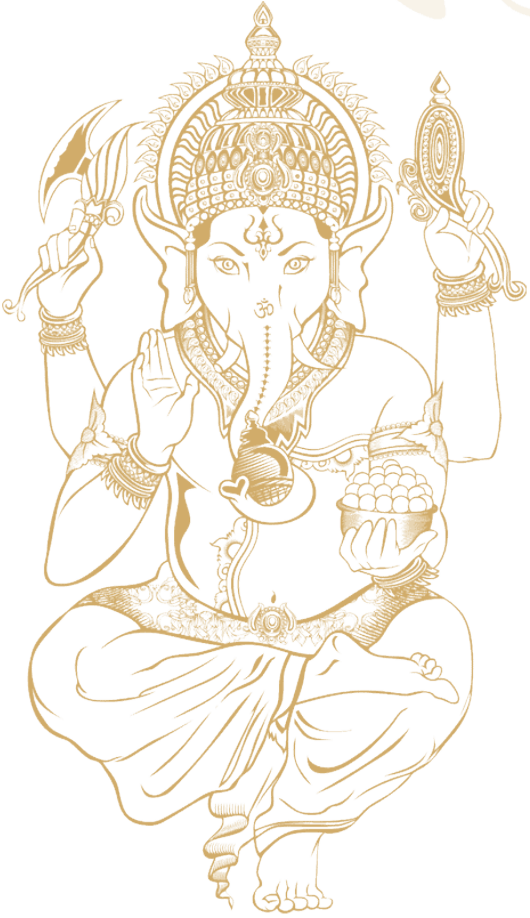

Pihu

11 Jan 2024

11:53 AM

Yamunanagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121501801**

तिथि 11/01/2024 **समय** 11:53:00 **वार** गुरुवार **स्थान** Yamunanagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:11:29
अक्षांश 30:07:00 उत्तर **रेखांश** 77:18:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:20:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:53:17 घं
वेलान्तर	00:07:38 घं
सूर्योदय	07:18:17 घं
सूर्यास्त	17:39:00 घं
चैत्रादि संवत	2080
शक संवत	1945
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
तिथि	15
नक्षत्र	पूर्वाषाढ़ा
योग	व्याघात
करण	नाग

अवकहड़ा चक्र

गण	मनुष्य
योनि	वानर
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
वर्ग	मूषक
युँजा	अन्त्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	फा-फारुख
पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
होरा	बुध
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

शुक्र 5वर्ष 3मा 10दि

शुक्र

11/01/2024
22/04/2029

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	11/01/2024
शनि	22/04/2025
बुध	21/02/2028
केतु	22/04/2029

योगिनी

सिद्धा 1वर्ष 10मा 5दि

संकटा

16/11/2025
16/11/2033

संकटा	27/08/2027
मंगला	16/11/2027
पिंगला	27/04/2028
धान्या	26/12/2028
भ्रामरी	16/11/2029
भद्रिका	27/12/2030
उल्का	27/04/2032
सिद्धा	16/11/2033

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			24:59:44	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	---	0:00			
सूर्य			26:18:44	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	केतु	मित्र राशि	1.61	आत्मा	पितृ	जन्म
चंद्र			23:08:52	धनु	पूर्वाषाढ़ा	3	शुक्र	शनि	सम राशि	1.18	अमात्य	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:46:06	धनु	मूल	4	केतु	शनि	मित्र राशि	1.25	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			02:55:26	धनु	मूल	1	केतु	शुक्र	सम राशि	1.22	कलत्र	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			11:36:17	मेष	अश्विनी	4	केतु	बुध	मित्र राशि	1.12	मातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र			20:57:06	वृश्चि	ज्येष्ठा	2	बुध	शुक्र	सम राशि	0.99	भ्रातृ	कलत्र	मित्र
शनि			10:01:03	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	गुरु	मूलत्रिकोण	1.19	ज्ञाति	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		26:04:10	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	मित्र
केतु	व		26:04:10	कन्या	चित्रा	1	मंगल	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	क्षेम

लग्न-चलित

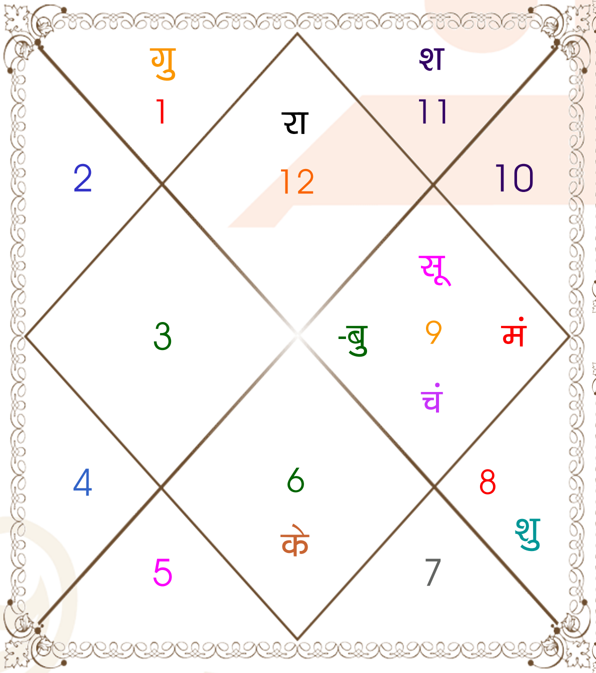

चन्द्र कुंडली

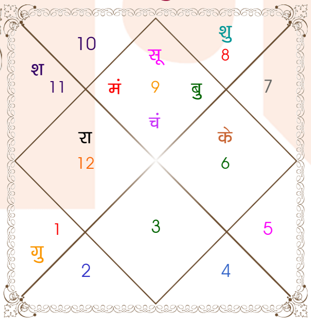

नवमांश कुंडली

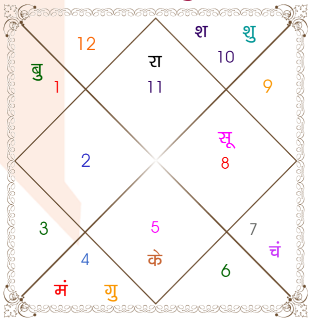

सर्वाष्टकवर्ग

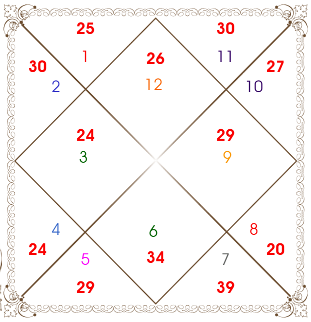

दशमांश कुंडली

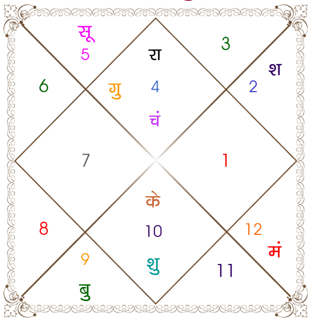

FUTUREPOINT Astro Solutions

एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोनः- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वाषाढा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, नाड़ी मध्य, योनि वानर तथा वर्ग मूषक होगा। नक्षत्र के तृतीय चरणानुसार आपके नाम का प्रथम अक्षर "फ" या "फा" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने सम्पूर्ण जीवन में समस्त सुखैश्वर्य का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आप अन्य लोगों से अत्यन्त ही मधुर तथा शालीनता के साथ व्यवहार रखेंगे जिससे आपसे सभी प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप अपने सम्भाषण में भी प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे। चरित्र से आप उत्तम रहेंगे। धनधान्य से भी आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में सामान्यतया इसका अभाव महसूस नहीं करेंगे। साथ ही आपकी पानी पीने की इच्छा भी अधिक होगी तथा बार बार इसका उपयोग करेंगे।

भूयो भूयस्तोयपानानुरक्तो भोक्ता चत्रचद्वाग्विलासः सुशीलः।
नूनं सम्पज्जायते तस्य गाढा पूर्वाषाढा जन्मभं यस्य पुंसः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक बार बार पानी पीने की इच्छा करने वाला, भोगी, मृदु तथा प्रिय बोलने वाला सुशील एवं अधिक सम्पत्ति वाला होता है।

आपको सुन्दर सुशील तथा गुणवती स्त्री की पत्नी के रूप में प्राप्ति होगी जो आपको समस्त प्रकार से सुख एवं आनन्द प्रदान करने में समर्थ रहेगी। समाज में आप एक आदरणीय व्यक्ति के रूप में ख्याति प्राप्त होंगे। आप हमेशा स्थिर मित्रता के इच्छुक रहेंगे। अतः आपकी मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं रहेगा तथा जो भी मित्र होंगे वे सभी बुद्धिमान तथा गुणवान होंगे। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य भी स्थिर रूप से आपके पास रहेगा।

इष्टानन्दकलत्रो मानी दृढ़सौहृदश्च जलदैवे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में पैदा हुआ जातक आनन्ददायिनी अभीष्ट स्त्री से युक्त, मान सम्मान से युक्त और सुस्थिर मित्र तथा सम्पत्ति वाला होता है।

आपके हृदय में प्रारम्भ से ही अन्य जनों के उपकार करने की भावना विद्यमान रहेगी तथा अवसरानुकूल परिचितों के अतिरिक्त अपरिचित जनों की भी आप यत्न पूर्वक भलाई करने के लिए तत्पर रहेंगे। इससे आपके सामाजिक सम्मान तथा स्थिति में नित्य अभिवृद्धि होती रहेगी। भाग्य सर्वथा आपके साथ रहेगा तथा अपने अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप अल्प परिश्रम से ही पूर्ण करने में सक्षम रहेंगे तथा समाज के

सभी वर्गो को अपना सहयोग तथा स्नेह प्रदान करेंगे। अतः सभी लोग आपका सम्मान करेंगे। आप एक उच्चकोटि के विद्वान तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करने तथा विभिन्न कार्यो को सम्पन्न करने में आप दक्षता प्राप्त होंगे।

दृष्टमात्रोपकारी च भाग्यवांश्च जनप्रियः।
पूर्वाषाढ़ाभवो नूनं सकलार्थ विचक्षणः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपरिचित, कामी, उपकार करने वाला, भाग्यवान, सभी जनों का प्रेमी, और सभी विषयों का विलक्षण पंडित होता है।

आप के आचार विचार उत्तम रहेंगे तथा समाज में सब प्रकार से आदरणीय रहेंगे। आपका स्वभाव हमेशा शान्त रहेगा। अतः किसी भी विषम परिस्थितियों में आप उत्तेजित नहीं होंगे तथा शान्तिपूर्वक उसका समाधान करेंगे।

पूर्वाषाढ़भवो विकारचरितो मानी सुखी शान्त धीः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में उत्पन्न बालक सच्चरित्र, सम्माननीय, सुखी, शान्त तथा बुद्धिमान होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरूष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरूषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

धनु राशि में जन्म लेने के कारण आपका गला एवं मुखभाग दीर्घाकार रहेगा। साथ ही आपके कान, ओंठ, दान्त भी स्थूल रहेंगे। तथा भुजाएं पुष्ट रहेंगी। आप को अपने पिता से पूर्ण धन सम्पति प्राप्त होगी। जिसका आप जीवन में सुखपूर्वक उपभोग कर सकेंगे। आपके मन में दान शीलता की प्रवृति भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। आप लेखन कार्य में भी रूचिशील तथा यत्नशील रहेंगे फलतः कविता सृजन में आपको सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो

सकती हैं। आप एक बलशाली पुरूष होंगे तथा अन्य जन आपसे प्रभावित रहेंगे। भाषण देने की कला में भी आप निपुण रहेंगे तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा सामाजिक जनों को प्रभावित करने में पूर्ण रूपेण सफलता प्राप्त करेंगे चित्रकला आदि में भी आपकी रूचि रहेगी तथा इसमें आप विशेष योग्यता भी अर्जित कर सकेंगे। आप स्वभाव से गम्भीर होंगे तथा गम्भीरता तथा धैर्यपूर्वक अपने कार्यों को सम्पन्न करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन श्रद्धाभाव रहेगा तथा इसके विषय में आप विस्तृत ज्ञान भी स्वपरिश्रम से अर्जित करेंगे। आपके अपने बन्धुवर्ग से संबंध सामान्य तथा औपचारिक रहेंगे। आपको केवल प्रेम तथा समानता के व्यवहार से ही वश में किया जा सकेगा। दवाब या बलपूर्वक आपसे कुछ भी नहीं करवाया जा सकेगा।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्रवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योऌश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपके नेत्र गोलाकृति लिए अत्यन्त ही सुन्दर प्रतीत होंगे। साथ ही हाथ एवं कन्धे भी लम्बाई में अधिक हो सकते हैं। आपका सीना विशाल तथा विस्तृत रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के समीप निवास करना या भ्रमणादि करना आपको अत्यन्त ही प्रिय लगेगा तथा ऐसे अवसर प्राप्त करने के लिए आप प्रायः प्रयत्नशील ही रहेंगे। आप कठिन से कठिन विषय को हृदयगंम करने में हमेशा सफल रहेंगे। साथ ही आप हमेशा हृदय से प्रसन्नचित रहेंगे। अनावश्यक चिन्ता या दुःख आप नहीं करेंगे। आपके शरीर की हड्डियां भी पुष्ट एवं मजबूत रहेगी। आप में कृतज्ञता का गुण विद्यमान रहेगा तथा अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप पूर्ण रूप से उनका आभार मानेंगे तथा हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगे।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घांसो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोऌस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप एक परिश्रमी पुरूष होंगे तथा हमेशा किसी न किसी कार्य को करने में तत्पर रहेंगे। आप बोलने में भी निपुण रहेंगे। तथा अपनी वाक्पटुता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को आसानी से सिद्ध कर लेंगे। आप एक त्यागी पुरूष होंगे तथा जीवन में कई बार इस प्रवृति का पालन भी करेंगे। आपमें साहस तथा बहादुरी का भाव भी सर्वदा विद्यमान रहेगा। आप समस्त कार्यो को निर्भीकता से सम्पन्न करेंगे। आपके शत्रु आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने में प्राय असमर्थ ही रहेंगे। साथ ही आप उच्चाधिकारी वर्ग तथा धनाढ्य लोंगों के प्रिय होंगे तथा उनसे पूर्ण मान सम्मान तथा

सहयोग प्राप्त करेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोऽरिहन्ता साम्नैकसाध्योऽशिवभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार के कार्यों तथा कलाओं में दक्ष रहेंगे। आपका स्वभाव विनम्र तथा सुशील रहेगा एवं आपका चरित्र भी निर्मल एवं अनुकरणीय रहेगा साथ ही आप स्पष्ट बोलने वाले व्यक्ति होंगे तथा जो कुछ भी कहना हो स्पष्ट रूप से किसी के भी सामने कह देंगे। पीठ पीछे कहने की आपकी आदत नहीं होगी। इसके साथ ही आप अपनी आय के अनुसार ही सोच विचार कर व्यय करेंगे।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।
शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शारीरिक अंग सुन्दर तथा सुडौलता से युक्त रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में सर्वमान्य या श्रेष्ठ समझे जाएंगे तथा सभी कुलीन जन आपको यथोचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। चित्रकारी तथा इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में भी आप विशिष्ट सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

सौम्याङ्गो रुचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप एक शूरवीर तथा साहसी व्यक्ति होंगे। सत्य के प्रति आपकी हार्दिक निष्ठा रहेगी। तथा आजीवन इसके अनुपालन में तत्पर रहेंगे। साथ ही आप सत्व गुणों से भी सम्पन्न रहेंगे। आप एक दयालु पुरुष होंगे तथा किसी भी अन्य व्यक्ति के लिए आपके मन में द्वेष या वैमनस्य का भाव नहीं रहेगा। आप एक बुद्धिमान तथा धनवान पत्नी से युक्त होकर सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे। विभिन्न प्रकार के नाटकों के करने में भी आप रुचि शील रहेंगे तथा हमेशा मधुर एवं प्रिय वाणी का अपने संवादों में प्रयोग करेंगे। आपका शरीर स्थूल होगा तथा कभी कभी आपके आपके किसी कार्य से आपके पूर्ण परिवार तथा कुल को परेशानी तथा कष्टानुभूति करनी पड़ सकती है।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

इस प्रकार आप सर्व गुणों से सम्पन्न रह कर आप समाज में एक श्रद्धेय तथा सम्मानीय व्यक्ति समझे जाएंगे। अपने बन्धु वर्ग में भी आप को श्रेष्ठता प्राप्त रहेंगे। साथ ही देवता, ब्राह्मणों तथा गुरुजनों के प्रति भी आपके मन में सेवा तथा श्रद्धा का भाव विद्यमान रहेगा। जिसका आप समय समय पर अनुपालन भी करते रहेंगे। आप की चाल अत्यन्त

ही आकर्षण तथा दर्शनीय होगी। परन्तु आप में सहन शक्ति का अभाव रहेगा। इससे कई बार आपको अनावश्यक रूप से मानसिक तथा आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरुपचेता बन्धुर्वर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

मनुष्य गण में जन्म लेने के कारण आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति असीम श्रद्धा तथा पूजा का भाव रखने वाले पुरुष होंगे साथ ही आप अन्य कार्यो तथा कलाओं के विषय में भी जानकारी रखने वाले होंगे। आपकी बुद्धि अत्यन्त तीव्र होगी तथा समस्त कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न होंगे। आपकी शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य जनों को सुख प्रदान करने वाले भी होंगे।

आपका शारीरिक सौन्दर्य अत्यन्त ही आकर्षक रहेगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा जीवन में आप अपनी इस प्रवृति का समय समय पर पालन करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। आप सादगी से जीवन व्यतीत करने में रूचिशील रहेंगे तथा अनावश्यक दिखावटीपन से आप दूर ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा समाज में एक महान विद्वान के रूप में ख्याति अर्जित करेंगे।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

वानर योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव में कभी कभी चंचलता भी रहेगी। आप मिष्ठान प्रिय रहेंगे तथा मीठे पदार्थो के भक्षण में अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। आप धन के प्रति लोलुपता का प्रदर्शन भी करेंगे तथा इसे प्राप्त करने के लिए अत्यन्त ही अधीरता का परिचय देंगे। आपकी प्रवृति विवाद की ओर भी जागृत रहेगी अतः समय समय पर अन्य जनों से आपका विवाद होता रहेगा। काम की भी आप में प्रबलता रहेगी। आपकी सन्तान गुणवान एवं बुद्धिमान रहेगी। इसके अतिरिक्त आप एक साहसी तथा वीर पुरुष भी होंगे।

चपलो मिष्टभोगी चार्थलुब्धश्च कलिप्रियः।
सकामःसत्प्रजःशूरोनरो वानरयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् वानर योनि में उत्पन्न पुरुष चंचल, मीठी चीजों का खाने वाला, धन का लोभी, झगड़ों का प्रेमी, काम चेष्टा वाला, अच्छी सन्तान से युक्त एवं शूरवीर होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यो में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां भरणी नक्षत्र, वज्र योग, तैतिल करण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि का चन्द्रमा प्रायः अशुभ

फल प्रदान करने वाले होंगे। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य 3,8,13 तिथियों भरणी नक्षत्र वज्र योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण या क्रय विक्रय आदि कार्यो को शुभारम्भ न करें। अन्यथा शुभ फलों की अपेक्षा अशुभ फलों की ही प्राप्ति होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी विशेष सजग रहें।

यदि आपके लिए समय अच्छा न चल रहा हो मानसिक परेशानी शारीरिक व्याकुलता व्यापार में हानि नौकरी या प्रोन्नति में बाधा तथा अन्य कार्यो में असफलता मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास भी सम्पन्न करने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीतवस्त्र, पीत पुष्प, पीली चन्दन, चने की दाल तथा हल्दी आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुयोग्यपात्र को दान करना चाहिए। इसके साथ ही वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 16000 जप करने से आपके मन को शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता आएगी एवं शुभ फलों में वृद्धि होगी जिससे आपकी समस्त विघ्न बाधाएं दूर होंगी एवं अन्य लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।